तंत्र विद्या क्या है?

तंत्र विद्या मनुष्य के कर्म को उसकी चेतना और उत्तरदायित्व से जोड़ती है...

कलियुग में तंत्र विद्या, सतयुग की वैदिक उपासना के समान फल देती है...

तंत्र का अर्थ है - तन के अन्दर झांकने की प्रक्रिया, जिससे मानव जीवन में ऊर्ध्वगामी हो सकने की क्षमता प्राप्त कर सके।

तंत्र का अभिप्राय है - **एक विस्फोटात्मक ऊर्जा का प्रादुर्भाव, जिससे सूक्ष्म शरीर में स्थित सुप्त प्राण-शक्ति का ऊर्ध्वगामी विकास तेजी से हो सके, ताकि तीव्र क्रिया शक्ति का जागरण हो सके।**

सीधे-सीधे शब्दों में कहा जाय तो **तंत्र वह क्रिया है, जिसमें स्वस्थ तन, स्वस्थ मन, स्वस्थ बुद्धि तथा स्वस्थ विवेक का पूर्ण समायोजन होकर एक दिशा में गतिशील हो।** जीवन में जिसे एक लगन लग जाना कहते हैं, कि मैं अपने जीवन में यह प्राप्त करके ही रहूंगा, तो वह एक प्रकार से तांत्रिक क्रिया कर रहा है, क्योंकि तंत्र मनुष्य की त्रुटियों, समस्याओं और कुन्ठाओं से मुक्त करता है, तंत्र मानसिक, शारीरिक और संवेदनात्मक रूप को संतुलित करता है, तो फिर तंत्र को क्यों नहीं अपनाएं क्योंकि तंत्र जीवन की श्रेष्ठत्तम विद्या है, लेकिन तंत्र में सर्वाधिक प्रयोग मंत्र का होता है।

तंत्र प्रकृति और ब्रह्माण्ड में सामंजस्य स्थापित करने की क्रिया है। **प्रकृति अर्थात् शक्ति और ब्रह्माण्ड जो शिव हैं।** इन्हीं दोनों का संयोग तो सृष्टि है, तभी तो शक्ति तंत्र की विधाओं के विषय में शिव से प्रश्न करती है।

कलियुग में तंत्र विद्या, तंत्र साधना की विशेष महिमा है, तंत्र एक जांचे-परखे मार्ग द्वारा ब्रह्म, परमात्मा की खोज का मार्ग है।

वास्तव में सफलता का, लक्ष्य प्राप्ति का सीधा सम्बन्ध उसकी प्राप्ति में हुए प्रयास, विफलताए, बाधाएं, परेशानियां और सर्वाधिक जूझने की शक्ति से ही है। तंत्र वास्तव में सफलता, लक्ष्य सिद्धि की गारण्टी है, तंत्र व्यक्ति की शक्तियों, क्रियाओं में सन्तुलन स्थापित करता है।

तंत्रः शिव और शक्ति कृपा स्वरूप

दरअसल, तंत्र का सम्पूर्ण पाठ्यक्रम शिव और शक्ति के मध्य संवाद है। शक्ति जो शिव की प्रिया हैं, उनसे प्रश्न करती हैं और शिव उसके उत्तर में एक विधि बताते हैं। यहां शक्ति शिष्य की भूमिका में नजर आती हैं, क्योंकि उनमें

जिस प्रकार प्रकाश का ज्ञान शब्दों से नहीं, दृष्टि से होता है, उसी प्रकार आत्म-तत्व का ज्ञान तर्क से नहीं, साधना से होता है...

तंत्र मनुष्य की आंखों से अज्ञान का आवरण हटाता है और उसे उसके ही भीतर स्थित सत्य से परिचित कराता है...

तंत्र के मार्ग में विवाद नहीं या प्रतिरोध नहीं होते है..., केवल स्वीकार्यता होती है।

शिव की भांति तंत्र भी 'जो है' उसे वैसा ही स्वीकार करता है, बिना किसी सजावट, बिना किसी अस्वीकार्यता के...

तंत्र की वास्तविक सिद्धि किसी को पराजित करने में नहीं, स्वयं पर विजय पाने में है...

जो व्यक्ति स्वार्थ, भय या अहंकार से प्रेरित होकर तंत्र शक्ति का प्रयोग करता है, वह तंत्र के मर्म को तो समझता ही नहीं है...

तंत्र में प्रत्येक क्रिया का प्रभाव पहले कर्ता पर पड़ता है। यह विद्या उतनी ही सूक्ष्म है जितनी गहरी...;

और उतनी ही उत्तरदायित्वपूर्ण है जितनी शक्तिशाली...

सच को जानने की छटपटाहट है। शक्ति पूछती हैं, प्रभु आपका सत्य क्या है, और शिव तरीका बताते हैं, उस सत्य को जानने, उसे समझने का, उसे आत्मसात करने का।

जरा समझिए, आप किसी अंधे व्यक्ति को प्रकाश (रोशनी) के विषय में दसियों बातें समझा दीजिए, उसे कुछ भी समझ नहीं आएगा पर आप उसे आंखें दे दीजिए, और वह स्वयं रोशनी से साक्षात्कार कर लेगा।

तंत्र आपकी आखों से अज्ञान का पर्दा हटाता है, और आपको वह जांचा-परखा मार्ग बताता है, जिसके द्वारा कार्य सिद्ध होंगे। कोई प्रश्न नहीं, कोई विवाद नहीं, शिव की तरह तंत्र जो है, जैसा है, उसे उसी रूप में स्वीकार कर लेता है।

कलियुग में तंत्र साधना की विशेष महिमा है। शक्ति ने शिव से प्रश्न किया कि कलियुग में मनुष्य अपने पापों का नाश कैसे करेगा? महादेव का उत्तर था कि कलियुग में तंत्र साधना ही सतयुग की वैदिक पूजा की तरह फल देगी। तंत्र एक जांचे-परखे मार्ग द्वारा उस ब्रह्म, उस परमात्मा के खोज की प्रक्रिया है, जिसमें साधनात्मक प्रयोग निर्णायक भूमिका निभाते हैं।

तांत्रिक प्रयोग - मुख्य कारण

तांत्रिक प्रयोग सरल नहीं है, किन्तु आजकल छोटे-मोटे टुच्चे किस्म के कई तांत्रिक बन गये हैं, जो किसी का हित तो कर नहीं पाते, पर दूसरों को नुकसान अवश्य पहुंचा देते हैं।

कुछ विशेष वर्ग के लोगों ने इस प्रकार के छोटे-मोटे तांत्रिक प्रयोग सीख लिए हैं और वे दूसरों के द्वारा पैसा मिलने पर इस प्रकार का प्रयोग कर देते हैं, इसके कारण सामने वाले की भरी-पूरी गृहस्थी बरबाद होकर रह जाती है।

विशेष बात यह है कि कोई व्यक्ति स्वार्थ वश किसी के विरुद्ध तंत्र प्रयोग करता है तो चाहे भले ही एक बार सामने वाले को नुकसान पहुंचा दे, लेकिन अंततः उसे स्वयं भी घोर हानि, पीड़ा उठानी ही पड़ती है।

यह तो वैसी बात हुई, कि किसी व्यक्ति को चाकू से सब्जी, फल काटने की कला मालूम है जबकि एक अज्ञानी भी चाकू से सब्जी, फल काट सकता है परन्तु उसमें उसके स्वयं के घाव लगने का डर रहता है और यदि शरीर पर घाव लग जाये तो कटे हुए स्थान की चिकित्सा करने की आवश्यकता होती है अन्यथा घाव सड़ सकता है, नुकसान हो सकता है और कभी-कभी लापरवाही में बड़ी हानि भी हो सकती है।

इसका तात्पर्य यह हुआ है कि घाव लगने में एक क्षण का समय लगता है परन्तु जो घाव होता है, उसको ठीक करने में लम्बा समय लग सकता है।

ठीक यही बात तांत्रिक प्रभाव की है। तांत्रिक प्रयोग कोई भी कर सकता है, परन्तु उसके परिणाम व्यक्ति को गहराई के साथ भोगने पड़ते हैं, और एक प्रकार से देखा जाए, तो पूरी जिन्दगी अस्त-व्यस्त हो जाती है। हमला करने या तांत्रिक प्रयोग कराने की विद्या सीखने में बहुत ज्यादा साधना की जरूरत नहीं होती, परन्तु तांत्रिक प्रयोग यदि हो गया है, तो उसे दूर करने के लिए कठिन साधना, सिद्धि या अनुभवी व्यक्ति की जरूरत होती ही है।

क्योंकि तांत्रिक प्रयोग हो जाने की स्थिति में उसको दूर करना विशेष विद्वान या जानकार के द्वारा ही संभव है और तांत्रिक प्रयोग हो जाने की स्थिति में उसको दूर करने के लिए यह जानना आवश्यक होता है, कि विद्याओं में से कौन

सा तांत्रिक प्रयोग हुआ है और किस प्रयोग से वह तांत्रिक प्रभाव समाप्त हो सकता है। इसके लिए तंत्र बाधा निवारण दीक्षा प्राप्त करना एक श्रेष्ठ एवं महत्वपूर्ण उपाय है।

तांत्रिक बाधा के संभावित परिणाम

दैनिक जीवन में घटने वाली घटनाओं से हम आसानी से मालूम कर सकते हैं, कि हम पर तांत्रिक प्रयोग हुआ है कि नहीं। यद्यपि दूसरे परिणाम भी हो सकते हैं, किन्तु यदि जीवन के सहज प्रवाह में अवरोध उत्पन्न होने लग जाएं, तो तंत्र प्रयोग की संभावना ही अधिक होती है।

यहां पर कुछ तथ्य दिये जा रहे हैं जिनके माध्यम से आप यह जान सकते हैं, कि तांत्रिक प्रयोग है या नहीं –

1. यदि स्वयं बीमार रहें, तबीयत ठीक नहीं रहे और इलाज कराने पर भी उसका परिणाम प्रतीत न हो, तो समझ लेना चाहिये, कि आप पर तंत्र प्रयोग हुआ है।
2. यदि आप हर समय चिन्ताग्रस्त रहते हैं या मन हर समय विचलित रहता है, तो समझना चाहिए, कि जरूर किसी ने आप पर तांत्रिक प्रयोग करवाया है।
3. यदि विवाह के कुछ वर्ष बीतने पर भी संतान नहीं हो रही हो और मेडिकल रिपोर्ट सही आ रही हो, तो यह समझ लेना चाहिए, कि किसी ने गर्भ बांध दिया है।
4. यदि आपने मकान बनाया है और उसके बाद बराबर कोई न कोई विपत्ति या परेशानी आती है तो समझ लेना चाहिए कि इसका कारण तांत्रिक प्रयोग ही है।
5. यदि आपका मनोबल समाप्त हो गया है, आप स्वयं को कमजोर महसूस करते है, जीवन को जीने का उत्साह खत्म हो गया हो, उन्नति की इच्छा ही मर गई हो, तो यह तांत्रिक प्रयोग का ही प्रभाव है।
6. यदि भाई-भाई में अकारण शत्रुता बढ़ गई हो और प्रयत्न करने पर भी समझौता नहीं हो अथवा एक दूसरे के प्रति व्यर्थ के मतभेद बढ़ते जा रहे हों, तो यह तांत्रिक प्रयोग का ही प्रभाव है।
7. यदि जीवन का बहुत बड़ा हिस्सा पार करने के बावजूद भी आपका मकान नहीं बन रहा हो या कोई नई जमीन नहीं खरीद पा रहे हों या मकान अधूरा रह रहा हो, तो निश्चय ही **'गृह बंधन प्रयोग'** है, जिसकी वजह से यह परेशानी आपको उठानी पड़ रही है।

तंत्र मन की चंचलता, बुद्धि की अस्थिरता और इन्द्रियों के बिखराव को एक दिशा में समाहित करता है....

तंत्र तो संतुलन की विद्या है...

और जहां संतुलन, वहां सृजन होगा...

और जहां असंतुलन, वहां विकार...

8. यदि संतान का शारीरिक और बौद्धिक विकास भली प्रकार से नहीं हो रहा हो, तो इसका कारण तांत्रिक प्रयोग हो सकता है।
9. यदि आपके जीवन में अकारण शत्रु बनते जा रहे हों, आप जिसकी भी भलाई करें, वही शत्रु बन जाय या आपको हानि पहुंचाने की कोशिश करे, तो इसका सीधा-सादा तात्पर्य तांत्रिक प्रयोग ही है।
10. यदि पति-पत्नी में मतभेद हो, घर में कलह का वातावरण हो, तो यह कलह तंत्र प्रयोग है।
11. यदि प्रयत्न करने के बावजूद भी आपके कार्य सफल नहीं हो रहे हों, जो काम दूसरों से आसानी से हो जाते हैं पर आप आसानी से वह काम नहीं कर पाते है, तो तांत्रिक प्रयोग के अलावा और कोई कारण नहीं हो सकता।
12. यदि जीवन का बहुत बड़ा भाग व्यतीत करने पर भी आपका भाग्योदय नहीं हो रहा हो और हर क्षण बाधाएं आ रही हों, जो उन्नति होनी चाहिए वह नहीं हो रही हो, तो इसका तात्पर्य भाग्य बंधन अथवा इसी तरह का कोई तांत्रिक प्रयोग समझना चाहिये।
13. यदि आपके साधन कमजोर हो गये हों, प्रयत्न और परिश्रम के बावजूद भी लक्ष्मी-आगमन नहीं हो रहा हो, ग्राहक नहीं आते हों, लक्ष्मी की वृद्धि नहीं हो रही हो, व्यापार कमजोर पड़ गया हो, तो यह तांत्रिक प्रयोग के कारण से ही हो सकता है।

उक्त बिन्दुओं के आधार पर यह आसानी से जान सकते हैं कि हम वर्तमान परेशानी किस कारण से भुगत रहे हैं और इसका एकमात्र उपाय तंत्र बाधा का निवारण करने से ही संभव है।